बेटी शैली से वार्तालाप

डॉ. नरेश अग्रवाल

बेटी शैली से वार्तालाप

(प्रथम खंड)

डॉ. नरेश अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।
पुस्तक के रूप में प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा कुछ वर्षों पहले किया जा चुका है।
ISBN 81-7714-263-1
ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234, 65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति–सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों र्दुलभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।

लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क–

रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001

दूरभाष – 9334825981, 7488504892

ई. मेल – smcjsr77@gmail.com

बेवसाईट : www.nareshagarwala.com

भूमिका

'बेटी शैली से वार्तालाप' एक नये ढंग की कृति है। इसमें संगृहीत रचनाओं में बोधकथा तथा गद्यात्मक काव्य दोनों का रसात्मक समन्वय देखा जा सकता है। यह वार्तालाप कोई सामान्य बातचीत नहीं है। इसकी पृष्ठभूमि में लेखक के द्वारा संचित वह अनुभव–संपदा है, जो, जो सूक्ष्म पर्यवेक्षण से ही किसी को प्राप्त हो पाती है। श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है। यह स्मरणीय है कि नरेशजी मूलतः एक व्यवसायी हैं और जो व्यवसायी होता है, वह एक सफल पर्यवेक्षक और मनोविज्ञ भी होता है। परंतु, प्रत्येक व्यवसायी को मृग की तरह ही अपनी नाभी की इस कस्तूरी का पता नहीं रहता। नरेश जी अन्य व्यवसायियों से इसी अर्थ में पृथक हैं, क्योंकि इन्हें अपनी भीतर छिपी इस 'कस्तूरी' का ज्ञान है। इसीलिए तो वह कस्तूरी की इस सुगंध से सबको सुवासित करने के लिए सक्रिय भी हैं।

'बेटी शैली से वार्तालाप' एक विशिष्ट कृति है। यह बातचीत शैली को संबोधित है, लेकिन यह केवल उसके लिए ही नहीं है। यह प्रत्येक शैली और शैल के लिए है–वह चाहे भारत में रहता हो या संसार के किसी अन्य देश में। इसे अतिशयोक्ति न माना जाय, तो मैं यह भी कहना चाहूँगा कि यह वार्तालाप वैसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए है, जो सफल, सार्थक और प्रगामी जीवन का आकांक्षी है।

श्रवण कुमार गोस्वामी
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली–1

सुबह किस लिए होती है

सुबह किस लिए होती है कभी पूछा है तुमने अपने आप से? सूरज उगते ही सारे कामों में जागृति ला देता है। रात के सारे रुके हुए काम फिर से शुरु हो जाते हैं। यह वैसा समय है जब चारों ओर सुंदर-सुंदर फूल और पत्ते दिखाई देने लगते हैं। पक्षी उड़ते हुए और जहाँ बर्फ है वह पिघलती हुई। फिर ऐसे समय में आलस्य क्यों? कभी थके हुए पक्षी मिल जाएँ तो मुझे बताना। कभी बादल रुके हुए दिखाई दें तो बताना। जिस दिन सागर की लहरों में शांति आ जाएगी उस दिन समझ लो, सारा जीवन मूर्च्छित हो जाएगा। मुझे चाहिए तुम्हारे दोनों हाथ जो यह महसूस करते हों कि उनके पास दस अंगुलियां भी हैं और उन्हें संचालित करने वाला एक सक्रिय दिमाग भी। अपने सारे साधनों का उपयोग करने को प्रेरित करती है सूरज की रोशनी। अब तुम इससे कितनी अधिक प्रेरणा लेती हो, यह तुम पर निर्भर है। तुम्हें गंभीर होना चाहिए उस नमक की तरह जो अपने एक छोटे से टुकड़े भी अपनी ताकत दिखला देता है। ❖❖❖

हमारा मस्तिष्क एक दर्पण है

चमकते हुए सूरज का प्रकाश जब दर्पण पर पड़ता है तो वह उसे इतनी तेजी से लौटाता है कि उस तेज से आंखें बंद कर लेनी पड़ती हैं। हमारा मस्तिष्क एक दर्पण है। जितना ज्ञान इसे दिया जाता है वह दूसरों को भी उतना ही देने के काबिल हो जाता है। यह शिक्षा केवल तुम्हारे लिए ही नहीं है, कल दूसरों के भी काम आएगी। इस शिक्षा का हू–ब–हू इस्तेमाल नहीं होता, बल्कि इसके सहारे जो तुमने जाना है उससे मिलती–जुलती चीजों से संबंधित समस्याओं का निवारण भी होता है। जैसे एक बार तैरना सीख जाने पर किसी भी जल में तैर सकती हो या पेड़ उगाने की विधि जान लेने पर कहीं भी उसे उगा पाओगी। लेकिन भ्रमित और अधूरी शिक्षा से कुछ बड़ा कर पाने की लालसा, अच्छी शिक्षा के मार्ग में बाधक है। धैर्य ही समय को जीतता है और अज्ञान को भी। जिस तरह से सूई में तुम धागे को धीरे–धीरे पिरोती हो वैसे ही समय चुपचाप पास से गुजरता जाता है। उसे पहचानो और उसका उपयोग करो।❖❖❖

ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास

जब बहुत सारे विचार मिलकर कलात्मक रूप से सघन हो जाते हैं वही ज्ञान है, वही कला है। अच्छे विचारों का मन में पैदा होना एक शुभ बात है। यह ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास है। समय के अनुसार हमें अपनी सोच को बदलते रहना चाहिए एवं पुरानी रुढ़ियों को यानि पुराने विचारों को जो उस काल में अच्छे समझे गये होंगे बदल डालना चाहिए। हमेशा नये विचार जो अच्छी समझ से उत्पन्न हुए हैं, वर्तमान में अधिक उपयोगी होंगे।

❖❖❖

सुरक्षा की भावना

शिक्षा तुम्हारे दिमाग में घुला हुआ अर्जित धन है जिसे कोई भी तुमसे नहीं छीन सकता और देने पर भी इतनी आसानी से ले नहीं सकता। इसलिए तुम समझ सकती हो कि इसे पाने के बाद तुम्हारे मन में कितनी अधिक सुरक्षा की भावना आ जाती है। दूसरी बात यह है कि इसे जितना भी बाँटा जाए फिर भी यह कम नहीं होता है। उल्टे अपने भरा-पूरा होने का सुख हमें देता रहता है।

सृजन का श्रेष्ठ समय

जैसे एक कौआ थोड़ी सी धमक से ही तुरंत उड़ जाता है और शोर मचाने लगता है वैसे ही मन थोड़ा सा भी डरा नहीं कि ढेर सारे विचारों की बाढ़ लाकर हमें अशांत कर देता है। फिर घंटों हम परेशान रहते हैं और परेशान और डरे हुए मन से किसी भी चीज का सृजन नहीं हो सकता, ना ही किसी तरह की पढ़ाई। जिस समय तुम सबसे अधिक खुश होती हो, वही सृजन का श्रेष्ठ समय है उसी वक्त सब कुछ अच्छी तरह से पढ़ा जा सकता है। परीक्षा के अंतिम दिनों में बेहद दबाव में आकर पढ़ी गई चीजें अक्सर किसी काम की नहीं होतीं। बल्कि जो हमारी सामर्थ्य है यानी जिन चीजों को हम अच्छी तरह से लिख सकते थे, उन पर भी यह दबाव की स्थिति बुरा असर डालती है।

❖❖❖

एकाग्रता की नाव पर

तुम्हें अपने दिमाग पर उसी तरह से दबाव देना चाहिए जैसा कि एक नाव संतुलित ढंग से नदी के पानी पर दबाव देती है। जरा सी भी भार वहन की क्षमता से अधिक नाव में बढ़ा, वह डूबने लगती है। अतः धीरे–धीरे सोचते हुए, हल्के स्पर्श से, अपनी एकाग्रता की नाव पर, आगे बढ़ते रहना चाहिए।

❖❖❖

विशाल से विशाल चीजें

रात में हमारी गतिविधियाँ सिमट कर छोटी हो जाती हैं। लैंप के प्रकाश में किताबें सामने होती हैं और अकेली तुम। एक प्रेम चल रहा होता है– दोनों के बीच। किताबें किसी तरह से भी तुम में प्रवेश चाहती हैं और तुम भी उन्हें हृदय में बैठा लेना चाहती हो। कुछ डूब रहा होता है तुम्हारे अंदर में हर पल। इस वक्त थोड़ी सी भी आवाज तुम्हें बहुत कष्ट पहुँचाती है। ज्ञानार्जन अधिक संतुष्ट करता है। हमें लगता है विशाल से विशाल चीजें हममें आश्रय ले रही हैं। हम स्थिर क्यों न हों फिर भी कमरे से बाहर निकल कर कितना कुछ देख पा रहे हैं। हर बार अपने में आत्मविश्वास बढ़ता हुआ और लगता है कि यह सुबह कभी आए नहीं। विषयों को अच्छी तरह से पढ़ना हमें इसी तरह की संतुष्टि देता है।

❖❖❖

उस समय के मनुष्यों के लिए

कभी–कभी तुम देखोगी कि कुछ पुस्तकें तुम्हें ऊबाऊ लगने लगती हैं क्योंकि वे काफी पहले की लिखी हुई होती हैं और वे उस समय की भाषा एवँ उस समय के मनुष्यों के लिए लिखी गयी होती हैं। फिर भी इनका बहुत सारा हिस्सा हमारे काम का हो सकता है, चाहे वह भाषा के अनुसार पढ़ने में रुचिकर न हो लेकिन मेहनत करके उसे पढ़ा जाना चाहिए।

❖❖❖

आधुनिक काल में

आधुनिक काल में समय का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। नये साधनों की वजह से थोड़े से समय में ही हम बहुत सारे काम कर पाते हैं। पहले की तरह कहीं आने–जाने में या कोई उत्तर के पाने के लिए हमें अधिक इंतजार नहीं करना पड़ता। इसलिए एक समय में पहले से बहुत अधिक कार्य किये जा सकते हैं। जब–जब इस तरह के नये–नये साधन जन्म लेते हैं, हमें काम करने के ढंग में भी परिवर्तन करना पड़ता है। जो जमाना सामने है, किताबें उसी के आधार पर लिखी जाती हैं। इसलिए समय के बदलने के साथ इनका नया या पुराना होना स्वाभाविक है।

❖❖❖

एक कला छुपी होती है

हर चीज में एक कला छुपी होती है। साधारण पत्थर भी अच्छी तरह से तराशे जाने के बाद अच्छी कलाकृति बन जाता है। जिस पाठ को कलात्मक तरीके से पढ़ाया जाता है वह बेहद रुचिकर होकर हमेशा हमारी यादों में रहता है। कहा जाए तो पढ़ाई भी एक कला है और जिस शिक्षा को इसके कलात्मक पक्ष को निखारे बिना समझाया जाता है वह अधूरी ही रहती है। प्रत्येक शिक्षा को कलात्मक रूप से समझ लेने के बाद इसके इस्तेमाल का दायरा काफी बढ़ जाता है। इससे छात्रों में मौलिक ढंग से सोचने की प्रवृत्ति आती है और पढ़ाई के साथ–साथ व्यक्तित्व का विकास भी होता रहता है।

❖❖❖

किताबें सीढ़ियाँ हैं

ये किताबें सीढ़ियाँ हैं और इनको पार करते ही एक नया मनुष्य खड़ा मिलता है। हर बार किताबें पढ़ना खत्म करने के बाद तुम एक मनुष्य से मिल चुकी होती हो। अनगिनत किताबें और अनगिनत मनुष्य जब तुममें विद्यमान हो जाते हैं, तुम एक नये व्यक्तित्व की स्वामिनी हो जाती हो।

सबसे अच्छी योजना

तुमने देखा होगा कि कौए बहुत अधिक शोर मचाते हैं, उससे कम चील और गिद्ध चुपचाप आते हैं। ये गिद्ध भोजन का सबसे बड़ा हिस्सा खाकर उड़ जाते हैं, जबकि कौए बहुत थोड़ा प्राप्त करते हैं। इस तरह से सब कुछ शांति से चुपचाप हासिल कर लेना चाहिए। तुम्हें क्या मिला, तुम्हारी क्या चाह थी इसकी जरा सी भी भनक दूसरों को नहीं लगनी चाहिए। यही सबसे अच्छी योजना है।

❖❖❖

विद्या एक होने पर भी

सारा जल एक जैसा ही होता है लेकिन वह अलग-अलग तरह के कामों में लाया जाता है जैसे पीने, सफाई करने आदि। इसी तरह से विद्या एक होने पर भी उसे अलग-अलग तरह से उपयोग में लाया जाता है। इसलिए विद्या का संचय उचित है, क्योंकि जितना अधिक इसका संचय होगा, उतनी ही इसकी उपयोगिता बढ़ती जाएगी।

❖❖❖

बिना सोचे समझे

बिना सोचे समझे चील कभी झपट्टा नहीं मारती है। काफी पहले, ऊँचाई पर ही वह ठान लेती है कि उसे क्या प्राप्त करना है। और अपने दृढ़ इरादे से, तेजी से उतरती है जमीन पर। इसी तरह से तुम्हें भी काफी पहले से तय कर लेना होता है कि कौन से विषयों को लेकर पढ़ना है तुम्हें। जो अच्छे छात्र हैं वे अपनी रुचि को अच्छी तरह से जानते हैं एवं उन्हें विषयों को चुनते समय दूसरों पर आश्रित नहीं रहना पड़ता। लेकिन जो मध्यम किस्म के छात्र हैं उन्हें दूसरों के निर्णय पर भी आश्रित रहना होता है। चील नहीं पूछती किसी से भी कि किसे छोड़ा जाए और किसे खाया जाए। सब कुछ निश्चित होता है। सभी चीजों में जोखिम है, सफलता या असफलता का भय है। लेकिन जब भी कदम बढ़ाए जाएँ तो ऐसा लगे कि वे अपने पूर्ण संकल्प के साथ बढ़े हैं, जिसे झपटना है, उसकी ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। तभी सफलता मिलेगी।

❖❖❖

एक योग्य शिक्षक

अक्सर एक योग्य शिक्षक सारे बच्चों पर अपनी नजर रखता है तथा उनके चेहरों के भाव पढ़कर उनकी समस्याओं का समाधान खुद भी कर देता है। लेकिन जो छात्र खुलते नहीं या पढ़ाई में जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाते–उनके लिए कुछ भी कर पाना मुश्किल होता है। शिक्षक का अक्सर होनकार छात्रों पर या वैसे छात्र जो सचमुच कुछ जानने में अधिक रुचि रखते हैं, उन पर विशेष प्रेम होता है। जो छात्र कक्षाओं में किसी न किसी माध्यम से सबका ध्यान खींचते रहना चाहते हैं वे सक्रिय छात्र होते हैं। उन्हें ही अक्सर विद्यालय की अन्य गतिविधियाँ जैसे मॉनीटर, नाटक–मंचन, खेलकूद या ऐसे ही दूसरे कामों में अवसर दिया जाता है। जो छात्र लीक से हटकर अपने शिक्षक से विषयों के बारे में नये–नये प्रश्न पूछता है, समझो वही सबसे होनहार एवम् जिज्ञासु छात्र है। उनके नये प्रश्न कभी–कभी शिक्षकों को भी मुश्किल में डाल देते हैं।

❖❖❖

वे सुदृढ़ बने रहें

मैं मानता हूं कि इतनी लंबी पढ़ाई तुम्हें एक कठोर बंधन में बांध देती है, लेकिन ऐसा सचमुच होता नहीं है। इस कठोरता का अंतिम परिणाम बेहद सुखद और तृप्ति देने वाला होता है। जब पेड़ पर पहली बार फल आते हैं, वे उसके बोझ से झुक जाते हैं, लगता है जैसे उन्हें तकलीफ हो रही है लेकिन धीरे–धीरे वे स्थिर होकर अधिक से अधिक फल देने लगते हैं। इस दुनिया में सारे काम इसी तरह से किये जाते हैं और वे हमें लाभकारी नतीजों तक ले जाते हैं। एक पिता अपने बच्चों को जमीन पर स्थापित करना चाहता है ताकि उनकी अनुपस्थिति में भी वे सुदृढ़ बने रहें।

❖❖❖

विपरीत परिस्थितियाँ

कमल का फूल कीचड़ से निकलकर भी पानी के ऊपर अपने आप को खिला देता है और लोग मुग्ध होकर उसे देखते रहते हैं। विपरीत परिस्थितियाँ हमेशा हमें चारों ओर से घेरे रहती हैं, फिर भी हमें उभर कर बाहर आना होता है।

❖❖❖

ये वर्णमाला के अक्षर

ये वर्णमाला के अक्षर अपना कोई अर्थ नहीं रखते, लेकिन जब इन्हें आपस में मिलाया जाता है तो शब्द बन जाते हैं और वे भी अनेकों अर्थों वाले। फिर इन शब्दों को जोड़कर कभी कविता, तो कभी कहानी या फिर उपन्यास लिखे जाते हैं। इस तरह से इनमें अलग-अलग तरह के भाव पैदा होकर इनका दायरा असीम हो जाता है। समय के साथ-साथ शब्दों को सजाए जाने का ढंग भी बदलता रहता है यानि नयी-नयी तरह की भाषा जन्म लेने लगती है। इसलिए पुरानी लिखी किताबों एवम् नयी लिखी किताबों में फर्क मालूम होता है।

❖❖❖

एक दिशा चाहिए

सभी चीजों को आगे बढ़ने के लिए एक दिशा चाहिए। बिना सही दिशा के चीजें भटकती रहती हैं। जो सही दिशा में चल पाते हैं, वही सही काम कर पाते हैं। जैसे घड़ी की सूइयाँ अपनी धुरी से जरा सी भी इधर–उधर हुई तो कोई काम की नहीं रही। पेड़ों को दिशा दिखाता है सूरज, इसलिए वे उसी की ओर बढ़ते हैं। भेड़ों के झुंड में सबसे आगे चलने वाली भेड़ जिधर चलती है, बाकी की भेड़ें भी उसी का अनुसरण करती हैं। ऐसी दिशा शुरु से ही शिक्षकों या उनके तुल्य लोगों से मिलती है। धीरे–धीरे तुम भी इन चीजों से अच्छी तरह से परिचित हो जाती हो और अपनी इच्छानुसार अपनी एक दिशा निर्धारित करती हो।

❖❖❖

मानसिक समझ

कई चीजें जिन्हें तुम बिल्कुल पढ़ना नहीं चाहती थी, वे कुछ दिनों बाद तुम्हारे हाथ में आती हैं। उन्हें पढ़ते ही तुम्हें लगता है कि तुम उन्हें अच्छी तरह से समझ सकती हो। इसमें तुम्हारी दिलचस्पी जागृत हो जाती है। ऐसा मानसिक समझ के विकास होने पर होता है। जिसे भी धीरे–धीरे परिपक्वता प्राप्त हो रही है वह कठिन चीजों की तरफ भागेगा ही। वह ज्ञान की सर्वश्रेष्ठ ऊँचाइयों को पाना चाहेगा, चाहे इसमें कितनी भी मुश्किलें क्यों न आये। यह ज्ञान प्राप्ति सुखद घटना है और जो सबसे सुंदर है, उसकी तरफ ही इसका बहाव है।

❖❖❖

कुछ जानने की प्रवृत्ति

जैसे भूमि पर जल पड़ते ही वह उसे सोख लेती है उसी तरह से तुम में भी ज्ञान को देखते ही उसे प्राप्त कर लेने की प्रवृत्ति होनी चाहिए। कुछ जानने की प्रवृत्ति जब इस तरह की होती है तो तुम्हारा शैक्षिक विकास होता जाता है। तुम्हारे पास पढ़ने के इतने सारे साधन हैं जैसे किताब, कलम, आँखें, अँगुलियाँ, दिमाग, कान आदि, फिर उनका उपयोग क्यों न किया जाए ?

❖❖❖

कमजोर रस्सी के सहारे

कमजोर रस्सी के सहारे अगर कोई ऊपर चढ़ रहा है तो निश्चित है वह गिरेगा ही। अगर तुमने एक कठिन और ऊँचा मार्ग चुना है, परन्तु वहाँ तक जाने के अच्छे साधन नहीं है तुम्हारे पास, तो तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा। रास्ते के बीचों बीच लगेगा जैसे बहुत सारा समय व्यर्थ में खर्च हुआ, क्योंकि पूरी तैयारी नहीं थी मंजिल तक पहुंचने की। लेकिन तब तक देर हो चुकी होती है। अतः जब सही मार्ग समझ में नहीं आये, उस वक्त दूसरों से राय ली जा सकती है स्वयं जो साधन तुम्हारे पास हैं उनकी पूरी जाँच होनी चाहिए ताकि तुम समझ सको कि ये कितनी दूरी तक तुम्हारा साथ देंगे।

❖❖❖

तैयारी के बिना

इस दुनिया में तैयारी के बिना कुछ भी संभव नहीं। बीज छिड़कने के पहले जमीन को तैयार किया जाता है, लड़ाई में जाने से पहले सेना को प्रशिक्षित किया जाता है। एक सही तैयारी में अनगिनत पहलुओं का मनन होता है। स्वयं से कोई भी बात छूटी तो मन में खटकती रहती है। परीक्षा फल जाँचते समय परीक्षक का ध्यान तुम्हारी कमजोरियों पर सबसे पहले जाता है।

❖❖❖

हमारी निराशा

हमारी निराशा ऐसी स्थिति है, जिस क्षण हमें लगता है कि हम कुछ भी नहीं कर पायेंगे। हमारी सारी सामर्थ्य काल्पनिक रूप से क्षीण हो जाती हैं। ऐसा महसूस होता है जैसे सारी विपरीत परिस्थितियाँ हमें रोक देना चाहती हैं, आगे बढ़ने से। हम अपना आत्मविश्वास इतना खो चुके होते हैं कि ठीक से खड़े भी नहीं रह पाते। यह वैसी ही स्थिति है, जो पतझड़ के बाद एक पेड़ की होती है। कोई रौनक नहीं, कोई उत्साह नहीं। लेकिन धीरे–धीरे सब कुछ वापस लौट आता है। सिर्फ हिम्मत से कुछ दिन गुजारने होते हैं। ऐसे समय में तुम्हें भी धैर्य रखना चाहिए। इसे भी अशुभ शक्तियों के साथ हो रही लड़ाई समझना चाहिए।

❖❖❖

मस्तिष्क की प्रवृत्ति

मस्तिष्क की प्रवृत्ति है विचारों को पैदा करना। इसमें अनेकानेक विचार पैदा होते रहते हैं। सभी के अर्थ हैं, सभी के उपयोग हैं। लेकिन जिन्हें तुम समझती हो, उन्हीं का उपयोग कर पाती हो। बाकी सारे विचार अभी तुम्हारे लिए कच्चे हैं, उन्होंने अपना स्वरूप निर्धारित नहीं किया है। वे धीरे–धीरे पक कर तुम्हारे उपयोग में आयेंगे।

❖❖❖

सबसे सुविधाजनक डाली

एक पक्षी कहीं भी अपने घोंसले बना सकता है लेकिन वह चुनता है अपने लिए सबसे अच्छा पेड़ तथा उसकी सबसे सुविधाजनक डाली और बनाता है वहीं पर घोंसला। इन सारे पक्षियों की पसंद और समझ अलग-अलग होती है, शायद इसीलिए सिर्फ एक पेड़ पर ही नहीं बनाये जाते सारे घोंसले। वे फैले होते हैं, बहुत सारे पेड़ों पर। इस तरह से ही लोगों की रुचि एवम् पसंद अलग-अलग होती हैं। हमें उनका आदर करना चाहिए। कभी-कभी हमें लगता है कि हम जो कार्य कर रहे हैं केवल वही स्तर का है, बाकी दूसरों का नहीं। ऐसी सोच बिल्कुल गलत है। इस पृथ्वी में बहुत सारी विभिन्नताएँ हैं और उनका पूरा महत्व है तथा वे जानने योग्य हैं।

❖❖❖

सक्रियता दर्शाता है

जब शिक्षक कोई प्रश्न पूछते हों और तुम उसका उत्तर जानती हो तो फिर देर मत करो। सबसे पहले उत्तर देने के लिए हाथ उठाओ। यह कक्षा में तुम्हारी सक्रियता दर्शाता है और जब तुमने उस पाठ को अच्छी तरह से समझा है तो उसका उत्तर देना तुम्हारा कर्तव्य हो जाता है। इससे शिक्षक को भी अच्छा लगता है कि हर कोई उसकी बातों को समझता है तथा उसकी शिक्षा तुम लोगों तक पहुँच रही है। इससे शिक्षक प्रेरित होते हैं और नये-नये तरीकों से तुम्हें विषयों की जानकारी देते हैं।

❖❖❖

वास्तविक प्रगति में उत्सुकता

कभी–कभी हम थोड़ी सी सफलता से आत्ममुग्ध हो जाते हैं और समझने लगते हैं कि हमने बहुत कुछ कर लिया है। यह बोध स्वाभाविक है लेकिन धीरे–धीरे यह भ्रम भी टूटता जाता है। हमें इन चीजों पर अधिक ध्यान न देकर अपनी वास्तविक प्रगति में उत्सुकता बनाये रखनी चाहिए। यह उसी तरह से है जैसे सूरज के उदय होने से लेकर अस्त होने तक, इसके इतने सारे रंग तुम देखती हो। तुम भी एक ही हो लेकिन दुनिया में अपने कितने सारे प्रभाव छोड़ती हो!

❖❖❖

जितना अधिक नम्र और खुश रहोगी

जब भी तुम किसी से कुछ लेती हो, तुम्हारा हाथ देने वाले हाथ से हमेशा नीचे होता है एवम् सिर भी झुका हुआ। छाया लेने के लिए वृक्ष के नीचे जाना पड़ता है। ज्ञान लेते वक्त तुम जितना अधिक नम्र और खुश रहोगी, उतना ही अधिक और अच्छी तरह से यह तुम्हें प्राप्त होगा। तुम्हारे क्रोध में रहने पर कोई कितना भी तुम्हें यह देना चाहे, पर प्राप्त नहीं होगा। जैसे बादल क्रोध में आते हैं तो उन्हें अपना सारा जल गँवाना होता है।

❖❖❖

अहम् कहीं खो गया है

एक यज्ञ के संपन्न होने के बाद सारी भूमि पवित्र हो जाती है। जैसे एक अग्नि ने जन्म लिया, फिर कोई पवित्र कार्य करके वह बुझ गयी। एक विद्यार्थी की तपस्या भी कुछ ऐसी ही होती है। वह प्रतिदिन कुछ न कुछ अर्जित करता है और अपने आपको उठता हुआ महसूस करता है। विचित्र है यह ज्ञान जिसे सचमुच प्राप्त कर लेने के बाद लगता है कि बहुत कुछ जानने का अहम् कहीं खो गया है।

❖❖❖

शांत जल में

शांत जल में ही अपनी छवि दिखती है और स्थिर वायु में ही जलता हुआ दीपक रोशनी दे सकता है। सभी चीजों को जानने और सीखने के अपने–अपने तरीके हैं और इतनी सारी विभिन्नताओं को सँभालने के लिए तुम्हारे पास एक मस्तिष्क भी है, लेकिन तुम उससे कितना प्यार करती हो, इसी पर सारी सफलता निर्भर करती है।

संतुलन बना रहे

तुम जानती होगी कि जिस ओर भी हवा का दबाव कम होता है, हवा उसी ओर तेजी से बहने लगती है ताकि उसका संतुलन बना रहे। तुम्हारे पास भी ढेर सारे विषय हैं, केवल एक के सहारे तुम आगे नहीं बढ़ सकती। तुम्हें भी कमजोर विषयों की ओर ध्यान देना होगा, ताकि सारे विषयों के संबंध में संतुलन बना रहे। वैसे ही जैसे किसी भी काम को करने के लिए पांचों अँगुलियाँ जरूरी हैं।

❖❖❖

सारी चीजें हमें प्रेरणा देती हैं

इस संसार में मौजूद सारी चीजें हमें प्रेरणा देती हैं। काँटों से प्रेरित होकर हमने कपड़ा सीलने की सुइयाँ बनाई या ऑपरेशन के अस्त्र। वैसे ही वृक्ष के बड़े–बड़े तनों से प्रेरणा पाकर घर के स्तंभ। पक्षियों को उड़ते देखकर हमारे मन में भी उड़ने की कल्पना आयी होगी आदि–आदि। किसी भी वस्तु में जो गुण हैं या उनके कार्य करने का ढंग, उसकी प्रवृत्ति जान लेने पर उससे दूसरी चीजों को बनाने एवम् समझने में लाभ मिलता है। जैसे तुमने लोहे को अच्छी तरह से समझ लिया है तो फिर उससे बनी बड़ी–बड़ी चीजों को देखोगी तो केवल उनके आकार–प्रकार में भिन्नता पाओगी और उनकी सारी बनावट दिमाग में बैठा लोगी। जैसे लोहे से गिलास बनता है, छड़े बनती हैं, मशीने बनती हैं, तार बनते हैं आदि–आदि। सबमें लोहा एक होता है, लेकिन उनके स्वरूप में फर्क होता है।

❖❖❖

आपस में संतुलन रखना होगा

जब तुम दो मित्र मिलकर कोई काम करती हो तो फिर तराजू के दो पलड़ों की तरह तुम्हें आपस में संतुलन रखना होगा। कभी तुम झुके तो कभी वह। अड़े रहने से काम वहीं का वहीं रह जाएगा और दोनों में एक दूसरे को तिरस्कृत करने की प्रवृत्ति आयेगी।

❖❖❖

चीजों पर विजय

बच्चे के जन्म लेते ही माँ के हाथों में कुछ नया आ जाता है, जो उसके शरीर का ही टुकड़ा होता है। लेकिन उसके बाहर आ जाने से उसे अद्भुत खुशी मिलती है। संसार की छुपी चीजें इसी तरह से धीरे–धीरे अपना मुँह खोलती हैं। धीरे–धीरे धूप अपना रंग बदलती है और धीरे–धीरे नाव अपनी गति। संगीत को धीरे–धीरे साधना होता है और कला सिर्फ छू लेने भर से नहीं सीखी जा सकती। जब किसी गहराई को जानना होता है तो पहले अँधेरे के भय को हटाना होता है, फिर पूरा विश्वास कि उस चीज को हम पा ही लेंगे। फिर धीरे–धीरे आगे बढ़ना होता है। इसी तरह से पाते हैं हम सारी चीजों पर विजय।

❖❖❖

दीये की लौ

दीये की लौ सूरज के प्रकाश को देखकर भी धीमी ही जलती है। लेखक चाहे कितना भी बड़ा क्यों नहीं हो, कलम अपनी रफ्तार से चलेगी ही। सभी अपने–अपने स्वभाव से बंधे हुए हैं। वे अपने स्वभाव के अनुसार ज्ञान या अज्ञान की चादर ओढ़ना चाहते हैं लेकिन एक ज्ञानी व्यक्ति के पास आँखें हैं और वह बतला सकता है कि ज्ञान कहाँ है और यह कैसे प्राप्त हो सकता है। लेकिन उसे पाने के लिए चलना तो तुम्हें ही पड़ेगा न।

❖❖❖

लेने का तरीका

इस दुनिया में जितनी भी चीजें बनायी जाती हैं वे सब के लिये होती हैं। लेकिन उनमें से कुछ लेने का तरीका सबका अलग–अलग होता है। एक पक्षी के लिए बगीचे में सिर्फ एक तिनका ही उसके काम का होता है, मधुमक्खियों के लिए रस, मनुष्यों के लिए फल तथा फूल और बच्चों के लिए तितलियाँ। लेकिन एक लेखक अपने लेखन में वहाँ मौजूद सारी चीजों से रिश्ता जोड़कर उनका उपयोग कर लेता है। तुम्हें भी ऐसी ही आँखें और सोच विकसित करनी चाहिए, जो सारी चीजों को इसी तरह से देखे, समझे और महसूस करें।

❖❖❖

वर्णमाला के अक्षर

कई बार तुम देखती होगी कि लोगों की लिखावट अच्छी नहीं है, कुछ भी पढ़ा नहीं जा सकता है, जो पढ़ा भी जाता है वह बेहद मुश्किल से। यह इसलिए होता है क्योंकि वर्णमाला के अक्षर 'क' को लिखते समय वे इसकी सीधी रेखा को कुछ टेढ़ा कर देते हैं एवम् दूसरी वाली रेखा, जो सीधी रेखा के ऊपर लिखी जाती है, उसे पिचका देते हैं, यानि वर्णमाला के अक्षरों के स्वाभाविक स्वरूप को विकृत रूप में बदल देते हैं, इसलिए ये अक्षर भद्दे दिखाई पड़ते हैं। जैसे कि कोई बालों को उलझाये हुए, बिना नहाये-धोये गंदा सा चेहरा दिखाता रहे। अतः लिखावट ऐसी होनी चाहिए, जैसे साफ-सुथरा खिला हुआ चेहरा। ऐसा अभ्यास प्रायः बचपन में ही किया जाता है लेकिन बाद में भी अगर सतर्कता बरती जाए तो लिखावट सुंदर हो सकती है।

❖❖❖

यह सूरज मेरा है

समुद्र को भी लगता है कि यह सूरज मेरा है, नदी को भी लगता है कि यह उसका है और तालाब को भी कि यह मेरा है, क्योंकि यह उन सब में एक साथ प्रतिबिम्बत होता है। जबकि सूरज इनमें किसी में भी नहीं होता। वह आसमान में है। कई बार तुम सोचती होगी कि तुम सब कुछ जानती है। लेकिन शायद तुम कम ही जानती हो, केवल दृढ़तापूर्वक तुमने अधिक जानने का विचार अपने मन में बैठा लिया है। इसलिए अपने ज्ञान पर थोड़ा शक करो तथा स्थिरतापूर्वक उसकी जाँच भी।

❖❖❖

कोई माध्यम खोज लो

अपने सारे कामों में संतुलन रखो, जैसा कि एक नट रखता है, एक डंडे के सहारे। उसी तरह तुम भी कोई माध्यम खोज लो जो तुम्हें अनुशासित करे और संतुलित भी।

धुन बजने लगती है

जब अच्छे संगीत की धुन बजने लगती है तो अपने आप पाँव थिरकने लगते हैं। सुबह होते ही पक्षी उड़ान भरने लगते हैं। ऐसी ही मन की स्थिति होती है जब वह ज्ञान अर्जन के लिए प्रेरित हो जाता है। उस समय सारी चीजों को छोड़कर, उसकी एक ही इच्छा होती है, ज्ञान अर्जन की यानि अच्छा पढ़ने एवम् सीखने की। लेकिन प्रेरणा के स्रोत जब तुम्हें जगाते हैं और तुम उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देकर आलस्य में उलझी रहती हो तो सब कुछ लुप्त हो जाता है। अतः ऐसे अवसर हाथ से जाने नहीं देने चाहिए। बल्कि उनकी तलाश करनी चाहिए एवम् उपयोग भी।

❖❖❖

तुम्हारी थकान बताती है

एक पुल को बनाने में वर्षों लग जाते हैं। एक वृक्ष कई सालों के बाद फल देना शुरु करता है। लेकिन इस बीच उनका काम चलता रहता है। तुम्हारी थकान बताती है कि आज तुमने अच्छी तरह से अपना काम किया है। तिनके भी बहते–बहते समुद्र तक पहुँच जाते हैं। तुममें गति हो तो तुम्हें कोई नहीं रोक सकता। इस संसार की सारी शक्तियाँ–तुम्हारी मदद के लिए तैयार हैं, उनका लाभ लो। एक छोटी सी मेज पर बैठ कर भी बड़े–बड़े आविष्कार हो जाते हैं। कभी–कभी एक कड़ुवा शब्द भी प्राणघातक बन जाता है और बड़े–बड़े अस्त्र भी पड़े रहकर जंग के शिकार हो जाते हैं। शतरंज के खेल की तरह विशलेषण करके सारे पाठों को समझा जाता है। जब सारी इंद्रियों को एक ही काम की दिशा में लगाया जाता है, तो इसे एकाग्रता कहते हैं। यही परिश्रम है जो निर्धारण करता है मिलने वाले फल का और प्रत्येक परिश्रम खत्म होने पर छोड़ जाता है– एक सुखद अनुभूति हमारे साथ।

❖❖❖

जिनका कोई मूल्य नहीं

वे पौधे जिनका कोई मूल्य नहीं, फूलों के आने पर सुंदर लगने लगते हैं। तुम्हें कुछ बातें अच्छी तरह से याद नहीं हैं, लेकिन जितनी भी याद हैं, उन्हें अच्छी तरह से लिखा जाता है तो परीक्षा–पत्र में उनका मूल्य हो जाता है।

❖❖❖

खेतों में बारिश

जब खेतों में बारिश होती है तो किसान जल्द से जल्द बीज बोकर फसल उगा लेना चाहता है, क्योंकि वह जानता है यह पानी अधिक दिनों तक जमीन में रहेगा नहीं, उड़ने लगेगा। इस तरह से जब भी तुम्हें कोई सुअवसर मिले उसका उपयोग करो, अन्यथा देखते–देखते सब कुछ हाथ से निकल जाएगा।

❖❖❖

सिर्फ नकलची कहलाते हैं

हू–ब–हू तुम्हारे नाम या बातों की नकल करने वाला तोता बुद्धिमान नहीं होता, ना ही तुम्हारी लगायी हुई टोपी को छीनकर अपने सिर पर पहनकर इतराने वाला बंदर। ये सिर्फ नकलची कहलाते हैं। अतः अपने में जो कुछ है उसमें उसके मौलिक रूप में ही निखार लाओ। प्रत्येक चीज को अपनी तरह से देखो, उन्हें अच्छी तरह से समझो, अच्छी तरह से लिखो और जब कुछ अच्छी चीजें बनती हैं तो तुम्हारी उन्नति निश्चित है। नकल करके कुछ भी नया नहीं पाया जा सकता, बस उसके सहारे अपने आप को छुपाया जा सकता है। परंतु मैं चाहता हूँ कि तुम छुपो नहीं, प्रज्वलित करो अपने आपको और तुम्हारा तेज चारों ओर दिखाई दे।

❖❖❖

परिपक्वता आनी चाहिए

बच्चों के जूते अलग तरह के होते हैं एवं बड़ों के दूसरी तरह के। जैसे–जैसे तुम बड़ी होती जाती हो, तुमसे भी एक पुराने वृक्ष की तरह फल पाने की आशा की जाती है, यानि तुमसे भी कुछ दूसरों को मिलना चाहिए। सभी उम्मीद रखते हैं कि उम्र बढ़ने के हिसाब से तुम्हारी बात, व्यवहार एवम् तौर तरीकों में परिपक्वता आनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है, तो तुम दीवार पर लगे एक वट वृक्ष की तरह हो, जो सिर्फ अपने को बचाने के लिए ही संघर्ष कर रहा होता है।

❖❖❖

इंतजार नहीं करता

फल पकते रहते हैं, फूल खिलते रहते हैं और यों समय गुजरता चला जाता है। वह तुम्हारे निर्णय के लिए इंतजार नहीं करता। तुममें अगर यह क्षमता नहीं आई कि किस तरह से इस समय को रोककर उसका इस्तेमाल करो तो समझ लो कि अब देर नहीं करनी चाहिए, जो भी खोया है उसे भुलाकर, सामने जो समय गुजर रहा है उसे पहचानो और उसी के अनुसार अपना निर्णय लो।

रेत के छोटे-छोटे कण

रेत के छोटे-छोटे कण मिलकर ढेर बनते हैं। घड़ी की जो सूई सबसे तेज रफ्तार से चलती है वही बाकी दूसरी दो सूइयों की दिशा निर्धारित करती है तुमने केवल एक साँस ली और समय बीत गया। लेकिन इन्हीं छोटे-छोटे पल में भी तुम कुछ न कुछ तो कर ही रही थी। इसलिए जो बिल्कुल धीरे-धीरे भी काम किये जा रहे हैं वे दिमाग में सँकलित होकर कोई न कोई विस्तृत आकार एक दिन धारण कर लेंगे, इसलिए व्यर्थ के कामों में अपना समय गँवा कर तुम अच्छी चीजें संकलित नहीं कर पाती, बल्कि जो कुछ अच्छा सँकलित होना चाहिए था, उसमें भी बाधा डालती हो या विकृति लाती हो। इसलिए पढ़ना छोड़ने पर तुम्हें पछतावा होने लगता है।

❖❖❖

ज्ञान हमेशा अक्षुण्ण है

होली ने तुम्हें रंगों से भिंगो दिया, पानी डाला कि सब कुछ बह गया। क्षणिक होती है सारी खुशियाँ, आयी नहीं कि समय इन्हें धोने लगा। लेकिन ज्ञान हमेशा अक्षुण्ण है, यह बर्फ की तरह पिघलता नहीं।

❖❖❖

तुम्हें चौकन्ना रहना होगा

क्रिकेट के खेल में, गेंद के बैट से मारे जाने के बाद, सभी ग्यारह खिलाड़ी चौकन्ने हो जाते हैं, मालूम नहीं गेंद किसके हाथ में आ जाए। फिर जिस आदमी के हाथों के पास से यह गुजरती है उसने जरा सा भी आलस किया, गति के कारण गेंद नीचे गिर गयी। आज के युग में भी ऐसी ही होती है प्रतिस्पर्धा, जरा सी भी चूक की कि अवसर हाथ से निकला और दूसरों को प्राप्त हुआ। अवसर आते ही रहेंगे, लेकिन तुम्हें चौकन्ना रहना होगा वरना वे हाथ से निकल जाएँगे।

❖❖❖

जो बहुमूल्य होता है

जितने भी खनिज हैं सभी जमीन के नीचे हैं, कोई ऊपर नहीं। जो बहुमूल्य होता है वह छुपा हुआ होता है। इसलिए कुछ लोगों को विद्या कहाँ है, इसका आभास तक नहीं होता।

❖❖❖

उसे जगाये रखो

जब कहीं आग लग जाती है, सबसे पहले मनुष्यों को बचाने की कोशिश की जाती है, फिर बाकी चीजों को। इससे समझ सकती हो कि मनुष्य जीवन का कितना अधिक महत्व है। मनुष्य ही पृथ्वी पर सबसे बड़ा बुद्धिजीवी है जो कुछ न कुछ नया करने का प्रयत्न करता रहता है। इसलिए अपने में जो भी खास बातें हैं तथा जिनके कारण तुम मनुष्य हो, उन्हें पहचानो। ताकि तुम महसूस कर सको कि तुम्हारे पास इतने सारे गुण हैं। कलम अगर मेज पर पड़ी रही, तो प्लास्टिक का टुकड़ा भर थी। लेकिन जब इससे लिखा गया तो यह महत्वपूर्ण चीज बन गयी। इसलिए अपनी उपयोगिता को सुला कर मत रखो। उसे जगाये रखो।

❖❖❖

अपनी शक्ति को

जब पेड़ों पर फल आते हैं, तो पेड़ का सारा ध्यान उन्हें बड़ा एवम् स्वादिष्ट बनाने में लग जाता है। जैसे ही वे फल तोड़ लिये जाते हैं, पेड़ अपनी शाखाओं को बढ़ाने एवम् मजबूत करने में अपना ध्यान लगाने लगता है। कोई भी शारीरिक कार्य करते समय हाथ–पाँव, कान–आँखें दिमाग आदि सभी एक साथ लगे होते हैं। लेकिन पढ़ते वक्त वे अपनी सारी शक्ति पाठ को समझने में लगा देते हैं। तुम जितना ही अपनी शक्ति को इस तरह से पुस्तकों पर केन्द्रित करोगी। उतना ही अधिक लाभ मिलेगा।

❖❖❖

मार्ग निकाल लेने के बाद

परीक्षा देते समय सबसे पहले आसान प्रश्नों को हल किया जाता है, फिर धीरे–धीरे कठिन प्रश्नों को। इसी तरह से अपना पाठ याद करते समय सबसे आसान चीजों को पहले समझना होता है, फिर उसी समझ के सहारे कठिन चीजों को। सारे पाठ एक आधार पर खड़े होते हैं। जिन्हें जाने बिना दूसरी चीजों को समझना बिल्कुल मुश्किल है। लेकिन इस क्रिया में विषयों के संबंध में अत्यधिक रुचि बनाए रखना बेहद जरूरी होता है। एक बार मार्ग निकाल लेने के बाद फिर कहीं भी कठिनाई नहीं होती।

❖❖❖

दवा की सूक्ष्म मात्रा

दवा की सूक्ष्म मात्रा भी जीवन देती है, दवा सूक्ष्म होकर भी प्राण है। आर्द्रता? पानी का ही एक रूप है। इसी तरह जो चुपचाप हैं, वे अपने में श्रेष्ठता छुपाये हुए हैं। श्रेष्ठ चीजें झूठ–मूठ के वार्तालाप नहीं करती, बल्कि स्वयं श्रेष्ठ तौर–तरीकों से अपनी बात बताती हैं। अच्छे विज्ञापन मौन रहकर भी बहुत कुछ कह जाते हैं।

अच्छे अनुभवों का मूल्य

मैं अब भी जब कभी अपने पुराने विद्यालय की ओर देखता हूँ तो लगता है कि मेरे जैसे कितने ही छात्र यहाँ आए होंगे और पढ़ाई खत्म करके चले गए होंगे। मुझे इस विद्यालय में बिताया हुआ हर खूबसूरत क्षण याद है और दूसरे छात्र भी होंगे जो यहाँ से पढ़कर विदा हुए हैं, उन्हें भी यह सब याद होगा। इस तरह से तुम देखोगी कि हजारों बच्चे ऐसे हैं जो एक ही जगह पढ़ने पर भी अलग-अलग अनुभव रखते हैं। इसलिए उन सभी के अच्छे अनुभवों का मूल्य है। लेकिन सभी अपने अनुभवों को खुले दिल से सबके सामने नहीं रख पाते, फिर भी जो अपने अनुभव संस्मरण के रूप में किताबों के द्वारा सबके सामने रखते हैं, उन्हें पढ़ना दूसरे लोगों को समझने जैसा है।

❖❖❖

शक्ति को पहचानो

इस संसार में हर पल कुछ नया हो रहा है और उस नये को जानने के लिए तुम्हें भी एक बदला हुआ मनुष्य बनना होगा। केवल तथाकथित रूढ़िवादी चीजों पर विश्वास करके तुम नया कुछ नहीं कर सकती। सभी चीजों को जानने की कोशिश करो, अपनी आँखों की शक्ति को पहचानो। इसी के सहारे तुम सारी चीजों को उभारना और ढालना सीखती हो।

❖❖❖

मन:स्थितियों के सहारे

रेगिस्तान में ऊँट पर बैठ कर यात्रा की जाती है और दुर्गम पहाड़ों के सँकरे रास्तों पर घोड़ों की पीठ पर बैठ कर। इसी तरह से अलग-अलग विषयों को अपनी भिन्न-भिन्न मन:स्थितियों के सहारे समझना होता है या पढ़ना होता है। अगर तुम गणित पढ़ रही हो, तो तुम्हें विशलेषण करने वाली बुद्धि का सहारा लेना होता है और इतिहास पढ़ते समय मन को पुराने जमाने में ले जाना होता है, उसी तरह विज्ञान पढ़ते समय इस युग की मौजूद सारी चीजों पर ध्यान केन्द्रित करना होता है। धीरे-धीरे परिस्थितियों के अनुसार हमारा दिमाग विषयों को पढ़ते ही उनके अनुसार ही तालमेल बैठा लेता है, जैसे गाने के अनुसार वाद्य यंत्रों में हाथ ऊपर-नीचे होने लगते हैं।

❖❖❖

रात्रि तुम्हें विदा

शुभ रात्रि! रात्रि तुम्हें विदा। जब सोने के पहले इस तरह के भाव अपने आप तुम्हारे मन में आते हैं तो लगता है कि आज का दिन अच्छा रहा। बहुत सारी उपलब्धियाँ मिलीं। यानि पहले से अधिक अच्छी तरह से चीजों को समझा गया और जो भी कार्य किये गये वे निष्ठा पूर्वक किये गये, अतः संतोष हुआ। फिर यह संतोषपूर्ण रात्रि काफी आरामदायक होती है। कल फिर से तुम नयी होकर आती हो, हर नयी चीज में हाथ लगाती हो।

❖❖❖

पाठ के अंत में

पाठ के अंत में कुछ प्रश्न लिखे जाते हैं। लेकिन जब पाठ अच्छी तरह से पढ़ा जाएगा, तो उसमें भी ढेर सारे कई प्रश्न निकलेंगे। इन्हीं का उत्तर तुम्हें ढूंढ़ना है।

❖❖❖

तुम्हारा हस्तक्षेप

हम जानते हैं कि एक छोटी सी चींटी हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगी लेकिन उसके काटने पर भी पूरा शरीर झनझना उठता है। वैसे ही यह ईर्ष्या अदृश्य होकर भी हमें भयभीत कर देती है। इर्ष्या करके हम दूसरे की तरक्की को रोकना चाहते हैं तथा चाहते हैं कि वह जहाँ है उससे भी अधिक नीचे गिर जाये। लेकिन ऐसा करना हमारे हाथों में नहीं होता। सभी का अपना–अपना जीने का तरीका है। दूसरों की सोच में तुम्हारा हस्तक्षेप तुम्हें ही परेशान कर देता है।

❖❖❖

अपनी जिज्ञासा

शरीर चाहे घुप्प अंधेरे में हो या पानी के तल में अपने भीतर साँस भरने का प्रयत्न कभी नहीं छोड़ेगा। हमारा स्वभाव ही है जानना और सीखना। जब तक उसे यह नहीं मिल जाता उसे पूरी तरह से, तृप्ति नहीं होती। कहीं भी मीठा रखो अपनी जिज्ञासा के कारण चीटियाँ पहुँच ही जाती हैं। कोई तुम्हें अच्छी तरह से पढ़ाये या न पढ़ाये तुम में दूसरों से कुछ लेने की काबिलीयत होनी चाहिए, बस चीजों को जानने की अपनी जिज्ञासा बनाये रखो। शेष कार्य शरीर खुद ही कर देगा।

❖❖❖

वे सक्रिय हो गईं

शरीर में थोड़ा सा भी जख्म हुआ नहीं कि खून बहने लगा। नाव में छोटा सा भी छेद हुआ नहीं कि पानी भरने लगा। इस तरह की कितनी ही घटनाएँ होती हैं जो तुम्हारे न चाहते हुए भी अपने आप घटने लगती है। जो बुरी चीजें हैं उनकी ओर तुमने जरा सा ध्यान दिया तो वे अपने आप तुम्हारे पास आने लगती हैं। इन चीजों पर बिल्कुल भी ध्यान न देकर अपने आपको बचाया जा सकता है। हमारा मन इसी तरह से काम करता है। जिन चीजों पर थोड़ा सा भी ध्यान दिया कि वे सक्रिय हो गईं।

❖❖❖

एक छुपी ताकत

नदियाँ हम से कहती हैं कि जब उनमें बहाव है तो एक न एक छुपी ताकत भी है जो उन्हें आगे की ओर भेज रही है। लेकिन वह ताकत अदृश्य है। ऐसा ही हर पाठ के साथ होता है। जो लिखे हुए शब्द और विषय हैं, वे तो सामने हैं किन्तु उनके पीछे एक उद्देश्य होता है, यानि उन्हें पढ़ने का कारण। ऐसे कारणों की जानकारी हमेशा पाठ को अच्छी तरह से समझने में मदद करती है।

पाठ के नोट्स

आम की गुठली को देखकर ही उसके वृक्ष की पूरी आकृति याद आ जाती है या किसी देश का लहराता हुआ झंडा देखकर उससे संबंधित सारी बातें मन में विचारों के रूप में गुजरने लगती हैं। इस तरह से इस दुनिया में जो भी चीजें हैं वे बहुत सारी दूसरी चीजों से भी जुड़ी होती हैं। हर चीज बहुत सारी चीजों का प्रतीक है जैसे कलम भर कहने से कागज, स्याही, पुस्तकों के चित्र उभर कर सामने आ जाते हैं। इस तरह के प्रतीक किसी भी पाठ के नोट्स बनाने के काम में मदद करते हैं।

❖❖❖

हर चीज जो मौजूद है

हर चीज जो मौजूद है उसका एक इतिहास होता है तथा उससे जुड़ी बहुत सी बातें भी। धीरे–धीरे थोड़ा–थोड़ा करके ऐसी बहुत सारी चीजों को जाना जा सकता है। कई बार एक ही विषय को अलग–अलग पुस्तकों का अध्ययन करके बहुत सारी नई जानकारियाँ इकट्ठी कर ली जाती हैं और नया लेख तैयार हो जाता है। हमें कभी भी अपने ज्ञान को सीमा में नहीं बाँधना चाहिए। हमेशा विचारों को विस्तृत और खुला रखना चाहिए। जैसे एक पतंग के उड़ने का कोई निश्चित मार्ग नहीं होता, कहीं भी वह उड़ सकती है और वापस लौट सकती है।

❖❖❖

बार-बार पढ़ने से

पत्रों में हमारी गहरी निजी भावनायें छिपी होती हैं। वे गाढ़े शहद की तरह हैं। एक सैनिक ही पत्रों का महत्व जानता है या कोई प्रेमी। इन पत्रों को व्यर्थ की चीज नहीं समझकर मन बहलाने का सशक्त साधन मानना चाहिए। जो मित्र तुमसे बिछुड़ गए थे उनसे भी पत्रों के द्वारा संपर्क बनाये रखा जा सकता है। ये पत्र कभी भी काम चलाऊ नहीं होने चाहिए बल्कि पूरी तन्मयता से लिखे होने चाहिए। एक पत्र में तुम अपने मन की पूरी बातें कह सकती हो और तुम्हारा पत्र मिलने पर दूसरे भी उसी के अनुरूप तुम्हें पत्र लिखते हैं। एक अच्छा पत्र प्रायः जिन्दगी भर हमारे साथ रहता है एवम् उसे बार–बार पढ़ने से सुख मिलता है।

❖❖❖

तुम से जब दूसरों को

जीवन जीने के लिए है और वह भी अच्छी तरह से। तुम सबसे प्रेम करो और यह वैसा प्रेम हो जिसमें वियोग दुख नहीं देता है। तुम बहो नदी की तरह–लय में और अपने ज्ञान रूपी रेत के कण बाँटते जाओ– दूसरों को, ताकि इस रेत से दूसरों के सुन्दर–सुन्दर घर बन सकें। जहाँ गति है वहीं दूरियाँ खत्म हो जाती हैं और तुम से जब दूसरों को कुछ प्राप्त होता है, तो यह अनुभव तुम्हें बेहद खुशी देता है।

❖❖❖

थोड़ा सा ही अंश

ये आँखें सचमुच में अंधी हैं, बिना प्रकाश के दो डग भी आगे नहीं बढ़ सकती। इन्हें प्रकाश चाहिए, अन्यथा बेकार। वैसे इतने सारे उपलब्ध प्रकाश का थोड़ा सा ही अंश ये लेती हैं बाकी इनके काम का नहीं।

❖❖❖

फसल बोने के बाद

फसल बोने के बाद भी डर लगा रहता है कि कहीं उसके अंकुरित होते छोटे–छोटे पौधों को चिड़िया खा नहीं जाएँ या फसल के दानों को कीड़े चट न कर जाएँ या रातों रात चोर इसे चोरी करके न ले जाएँ। निरंतर प्रतिदिन की सुरक्षा के बाद हमें हासिल होता है अन्न। अतः हमारे ज्ञान को भी इसी तरह से संभाल कर रखना पड़ता है किसी कवच जैसी सुरक्षात्मक व्यवस्था से। जैसा कि हर घड़ी के ऊपर एक काँच लगा होता है। हम हर अच्छी या बुरी चीज को देख सकते हैं। लेकिन सभी में हमारे दिमाग को लिप्त नहीं होने देना है। केवल अपने काम से मतलब रखने वाली जानकारियों को ही गहरी याददाश्त में रखना है अन्य को नहीं। इस तरह का हमारा संयम ही हमारी सोच में आने वाली विकृतियों से हमें बचाए रखता है।

❖❖❖

इतना अधिक फैलाओ

अगर एक नदी अपने तट को रुका हुआ देखती रहती, तो खुद क्या भी रुक नहीं जाती? यह हवा तो बिना थके परिश्रम करती रहती है। अगर सभी अंधकार का ही अनुशरण करते, तो प्रकाश कौन फैलाता? इसलिए वैसी चीजों की तरफ मत देखो जिनमें स्थिरता आ गयी है और जो जीवन में निराशा का संचार करती हैं। तुम्हारे मन को छूने के लिए असीम चीजें हैं। अपनी झोली को इतना अधिक फैलाओ कि सब कुछ समा जाने के बाद भी खाली बच जाए, इसका कोई न कोई कोना।

बचाव के उपाय

सारी चीजें पूरी होने में समय लेती हैं। बर्फीले पहाड़ों के थोड़े से ही हिस्से गर्मी में पिघल पाते हैं जब तक वे पूरे पिघले, उसके पहले ही सर्दियाँ आ जाती हैं और वे पूर्ववत् बने रहते हैं। इसी तरह से मुसीबतें हमें पूरी तरह से निगल जाएँ उससे पहले ही उनसे बचाव किया जा सकता है। इसलिए गलतियाँ करने के बाद भी संभलने के जो अवसर तुम्हें मिलते हैं उनमें संभल जाओ। इस जिंदगी का यही नियम है। जहाँ बाधाएँ हैं, उनसे बचाव के उपाय भी हैं।

❖❖❖

तुम्हारी मौजूद बुद्धि को

छोटे-छोटे रास्ते गाँव की तरफ ले जाते हैं और लंबे रास्ते शहरों की तरफ। गाँव बेहद छोटा लगता है, ऐसा महसूस होता है, जैसे बहुत कम होगी यह विभिन्नता। लेकिन ऐसा दूर से देखने से लगता है, जबकि ऐसा होता नहीं। यह ठीक वैसा ही है जैसे किसी हवाई जहाज से हम नीचे की ओर देखे तो सिर्फ धरती ही धरती नजर आती है लेकिन सच्चाई में होता है बहुत कुछ। गाँव के लोग भी अपने सीमित साधनों में तरह के तरह काम करते हैं, जैसे कपड़े बुनना, मिट्टी के सामान तैयार करना, फसल उगाना, शहद तैयार करना, बाँस की कलाकृतियाँ तैयार करना आदि। धीरे-धीरे ये छोटे-छोटे साधन ही कोई बड़ा आकार ले लेते हैं, जैसे छोटे-छोटे गाँव ही शहर का और गाँव के लोग ही बाद में शहरी हो जाते हैं। इस तरह से तुम्हारी मौजूद बुद्धि को भी बड़ा आकार लेना होगा ताकि वह आधुनिक हो जाए तथा देश-विदेश में मौजूद यंत्रों एवं उनकी प्रणाली को समझ सके और फिर कुछ नया कर सके या मौजूदा प्रणाली का अनुसरण कर अपने होने की सार्थकता सिद्ध कर सके।

❖❖❖

काँटों के आस-पास

फूल कभी भी परेशान नहीं होते कि उन्हें काँटों के आस-पास खिलना होगा बल्कि स्वयं में और काँटों में फर्क दिखलाकर वे खुशबू बिखेरते दूर चले जाते हैं। इसलिए जो अच्छे काम हैं वही तुम्हें करने चाहिए। यह चिंता नहीं करनी चाहिए कि दूसरे कुछ लोग बुरे काम कर रहे हैं, या कुछ भी बुरा सोच रहे हैं वह तुम्हारे बारे में है। फिर दूसरों का मस्तिष्क या सोच तुम्हारें वश में भी तो नहीं है।

❖❖❖

लिखने का ढंग

किसी भी बात को कम शब्दों में और सारे तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया जाता है तो उसे अच्छा माना जाता है। हमेशा लिखने का ढंग अपना निजी होना चाहिए न कि नकल किया हुआ। इस तरह से सम्भव है कि किसी नयी भाषा का जन्म हो जो तुम्हारे मन को तरंगित कर दे और निश्चित रूप से वह इतनी सरल हो कि आसानी से समझ में आ जाए। साथ–साथ उस भाषा में अच्छी लय–ताल हो जो एक वेग के साथ हमसे जुड़ जाए ताकि उसे बिना पढ़े या सुने, हम रह नहीं पायें। उम्मीद है कि इस दिशा में तुम पर्याप्त परिश्रम करोगी।

❖❖❖

ये सारी विधायें

लोहे के गर्म होने के बाद ही उसे किसी आकार में ढाला जा सकता है। मिट्टी में पानी होने पर ही वह उपजाऊ हो सकती है। इस तरह से सभी चीजों में अपने गुण होने पर भी, उन्हें जब तक दूसरी सहायक चीजें नहीं मिल पातीं, तब तक वे काम नहीं कर पातीं। जैसे घर में आटा जितना भी पड़ा हो, जब तक इसे गूंथा या पकाया नहीं जाएगा वह किसी काम में नहीं आएगा। इसी तरह से ये सारी विधायें योजनाएँ तो बना सकती हैं लेकिन उन्हें कार्य में लाने के लिए फिर दूसरे लोगों एवं अन्य साधनों की मदद लेनी होती है। कुछ ज्ञान ऐसे होते हैं जो दूसरों को मानसिक रूप से शिक्षा देने एवम् उनके ज्ञान की वृद्धि में सहायक होते हैं एवम् दूसरे कुछ महत्वपूर्ण ज्ञान वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा नयी चीजों के निर्माण में लगाए जाते हैं ताकि जीवन और अधिक सुविधापूर्ण एवम् खुशहाल हो।

❖❖❖

मुर्खतापूर्ण कार्य

पानी पर बहता हुआ एक तिनका पास से गुजर जाता है और उसे हम देखते तक नहीं। एक पक्षी चोंच में तिनका लेकर उड़े तो यह साधारण सी बात है लेकिन जब इसी तिनके में आग लग जाती है तो यह अधिक तेजी से जलना शुरु कर देता है और बहुत बड़ी सोचनीय स्थिति हो जाती है। इसी तरह होती है हमारी अज्ञानता। जब तक यह चुपचाप है किसी को कोई तकलीफ नहीं। लेकिन जैसे ही इसने कोई मुर्खतापूर्ण कार्य शुरु किया, पूरे राष्ट्र को तकलीफ होने लगी। इसलिए साक्षरता पर जोर दिया जाता है ताकि संसार में जो विकास हो रहा है, नयी–नयी चीजें हमारे सामने आ रही हैं उसकी जानकारी सबको हो सके और सारे लोग एक साथ चल सकें तथा इन चीजों का लाभ उठा सकें।

❖❖❖

जिस ज्ञान में प्रकाश है

जैसे बहुत सारे दीयों को प्रज्वलित करने के लिए सिर्फ एक दीये की आवश्यकता है, वैसे ही जिस ज्ञान में प्रकाश है वह ढेर सारी विद्याओं की जानकारी तुम्हें दे देता है। अब यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम उसे लेती हो या नहीं। लेकिन जो भी करो उसमें पूरा डूबकर। विद्या का यही सार है कि जब तुम उसमें पूरी डूबी तो वह छलक कर बाहर आने लगती है। फिर चारों तरफ विद्या ही विद्या बिखरी नजर आती है।

❖❖❖

समझने व टटोलने पर

जिस तरह से दही को मथने पर मक्खन अपने आप निकल आता है उसी प्रकार से एक पुस्तक को भी विभिन्न स्तर से समझने व टटोलने पर उसका रस हासिल हो जाता है। धीरे–धीरे जब तुम ज्ञान से समृद्ध होती जाती हो, उस वक्त वैसी बहुत सारी पुस्तकें, जो तुम्हें पहले अच्छी लगती थीं, अब शायद अच्छी नही लगे। लेकिन जो महत्वपूर्ण लेखन होता है उसकी यादें हमेशा बनी रहती है।

❖❖❖

आरंभिक अवस्था में

शुद्ध सोने को देखकर कोई भी पहचान लेता है कि यह सोना है। लेकिन जब यह अपने मूल रूप में अपनी आरंभिक खनिज पदार्थ की अवस्था में था तब उसे पहचानना बेहद कठिन था। ना ही इसका कोई उपयोग था। इसी तरह से जो ज्ञान विकसित हो चुका होता है उसे तो सब पहचान लेते हैं लेकिन जब यह परिष्कृत न होकर आरंभिक अवस्था में होता है, उसे पहचानना बहुत मुश्किल होता है। तुम्हें भी इन छुपी चीजों की पहचान करनी है और उन्हें चुनकर धीरे–धीरे अपने ज्ञान को परिष्कृत करना है ताकि कोई अच्छी चीज तैयार हो सके। यह ठीक वैसा ही है जैसा एक नये तरह के बीज के बारे में कोई नहीं जानता, लेकिन जब पूरा पेड़ निखार पर आ जाता है तो उसमें लदे फल–फूल, सभी का मन मोहने लगते हैं।

❖❖❖

आपसी विश्वास के कारण

तुम्हारी थोड़ी सी आवाज से ही कौए को परेशानी होने लगती है और वे दूर भागने लगते हैं जबकि चिड़ियाँ थोड़ी दूर तक फुदककर वापस वहीं बैठ जाती हैं। ऐसा आपसी विश्वास के कारण होता है। जिन पर भी हमारा विश्वास होता है कि वे हमें हानि नहीं पहुँचाऐंगे हम खुद-ब-खुद उनके पास चले जाते हैं। जब दोनों ओर से विश्वास पक्का होता है तब दोस्ती गहरी होती है। जब आपसी विश्वास नहीं होता उस वक्त हम सतर्क हो जाते हैं कि कहीं वह दोस्त, हमें किसी तरह की परेशानी में न डाल दे।

सुबह की उड़ान

सभी पक्षियों की सुबह की उड़ान कुछ अलग तरह से होती है और शाम की कुछ अलग ढंग से। इन सबमें अलग-अलग तरह के सुख का आभास होता है। यह मौसम और जलवायु में बदलाव के कारण होता है। भूगोल ऐसी ही चीजों के बारे में बतलाता है कि कहाँ पर किस तरह का मौसम होगा। वहाँ किस तरह की मिट्टी होगी, किस रूप-रंग के लोग होंगे, कैसे पेड़ पौधे होंगे और कैसे खनिज पदार्थ आदि। जब तुम मौसम, पेड़-पौधों, खनिज, मिट्टी एवं व्यक्ति को अच्छी तरह से समझ लेती हो तो भूगोल भी आसानी से समझने लगोगी। इस भूगोल से ही सारे ज्ञान, विज्ञान एवं कला का जन्म हुआ अतः कम जरूरी लगने वाला विषय होते हुए भी भूगोल अत्यंत आवश्यक विषय है। इस विषय का समुचित ज्ञान रखे बिना हमारा ज्ञान अधूरा ही रहेगा।

❖❖❖

यह उत्सव का वक्त है

जब तुम जैसी एक बच्ची खुश हो, तो कितना अच्छा लगता है और तुम जैसी ढेर सारी और बच्चियाँ एक साथ खुश हों और कितना अच्छा लगेगा। सभी एक साथ खुश हों, तो यह उत्सव का वक्त है। खुशियों की हवा चली नहीं कि सारी डालियाँ झूमने लगीं। बारिश पानी की एक बूंद से नहीं होती अनगिनत बूंदें इसमें शामिल होती हैं। बाँसुरी बहुत सारे छेदों के कारण सुरीली होती है। अतः बहुत सारे बच्चे ही आपस में मिलकर विद्यालय की शोभा बढ़ाते हैं। इसलिए सभी बच्चों को आपस में मिलजुल कर रहना ही सबसे अच्छी भावना है।

❖❖❖